अरविन्द जी के शैक्षिक विचार, दार्शनिक विचार और राजनीतिक विचार का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

कु. कुसुम गुप्ता, डॉ. सविता गुप्ता

शोधार्थी , प्रोफ़ेसर

लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
राजस्थान, भारत–304028

सार – यह शोध पत्र आरविंद घोष के विभिन्न विचारों की समकालीन व्याख्या करता है, जो शैक्षिक, दार्शनिक और राजनीतिक योगदान पर केंद्रित है। आरविंद घोष, जिन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दार्शनिक, दृष्टिकोणी और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रसिद्ध किया गया, ने गहरी समझ व्यक्त की है जो आज की वैश्विकृत दुनिया में भी महत्वपूर्ण हैं। पहले, उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने शिक्षा की परिवर्तक शक्ति को उजागर किया, जो व्यक्तिगत स्वाभिमान और सामाजिक समृद्धि के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है। घोष ने उन्हें एक शिक्षा प्रणाली की सिफारिश की जो न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि विचारशीलता और व्यक्तिगत विकास को भी पोषण देती है। दूसरे, दार्शनिक रूप से, घोष ने आध्यात्मिकता और वेदांती विचार पर गहरा अध्ययन किया, जिसका उद्देश्य पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति के साथ मिलाकर समझना था। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण ने आध्यात्मिकता और तार्किकता के बीच की गहरी पहचान की, जिसने मानव अस्तित्व और सामाजिक समन्वय को समझने का एक सम्पूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। तीसरे, राजनीतिक रूप से, घोष ने एक राष्ट्र की कल्पना की जिसे एकता, सामाजिक न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आधारित किया गया था। उनका प्रदर्शन राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक गर्व की ओर, जो समाजिक विविधता के बीच में भारतीय समाज के लिए अभी भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में, घोष के विचार महत्वपूर्ण निर्देशक हैं जो शिक्षात्मक सुधार, अंतरसंस्कृतिक संवाद, और सतत विकास के समस्याओं का समाधान करने में मदद कर सकते हैं। आधुनिक दृष्टिकोण से घोष की शिक्षाओं को पुनः मूल्यांकन करके, यह शोध पत्र उनके स्थायी महत्व को बताने का प्रयास करता है जो नैतिक नेतृत्व को रचना, वैश्विक नागरिकता को प्रोत्साहन देना, और समावेशी विकास को प्रोत्साहन देना चाहता है।

समाप्त में, आरविंद घोष की धरोहर समयानुसार सीमाओं को पार करती है, जो 21वीं सदी में समाजिक प्रगति और मानव समृद्धि के नींवीय सिद्धांतों के पुनरावलोकन को प्रेरित करती है।

कीवर्ड – आरविंद घोष, शैक्षिक दृष्टिकोण, दार्शनिक विचार, राजनीतिक दृष्टिकोण, शिक्षात्मक सुधार, आध्यात्मिकता, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, वैश्विक नागरिकता, समावेशी विकास

1. प्रस्तावना

आरविंद घोष, जिन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक दार्शनिक, आध्यात्मिक विचारक और राष्ट्रवादी नेता के रूप में सम्मानित किया गया, ने भारतीय बौद्धिक विचारधारा पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। उनके बहुआयामी विचारों में शिक्षा, दर्शन और राजनीति शामिल हैं, जो आज के वैश्वीकृत

संदर्भ में भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। [1] यह शोध पत्र घोष के विचारों की स्थायी प्रासंगिकता को गहराई से समझने का प्रयास करता है, और यह जांचता है कि वे कैसे आधुनिक चर्चाओं में शिक्षा सुधार, दार्शनिक विचार–विमर्श और राजनीतिक विचारधाराओं पर प्रभाव डालते हैं। घोष के शैक्षिक दर्शन ने शिक्षा को एक समग्र दृष्टिकोण से देखा, जिसमें शिक्षा को केवल ज्ञान प्रदान करने के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति के एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में देखा गया। उन्होंने एक ऐसे शैक्षिक ढांचे पर जोर दिया जो व्यक्तियों को रचनात्मकता, नैतिक मूल्यों और विचारशीलता के साथ सशक्त बनाता है। तेजी से तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता के युग में, पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक ज्ञान प्रणालियों के साथ एकीकृत करने पर घोष का जोर वर्तमान शैक्षिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करता है।[1]

दार्शनिक रूप से, घोष ने आध्यात्मिकता और तार्किकता के संयोजन का अन्वेषण किया, विशेष रूप से वेदांती विचार के माध्यम से। उन्होंने प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षाओं को आधुनिक वैज्ञानिक समझ के साथ समेटने का प्रयास किया, जिससे मानव अस्तित्व और वैश्विक समरसता को समृद्ध बनाने वाली सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व की प्रस्तावना की।[2] उनके दार्शनिक दृष्टिकोण आधुनिक नैतिकता, स्थिरता और आधुनिक अस्तित्वगत संकटों को संबोधित करने में आध्यात्मिकता की भूमिका पर चल रही चर्चाओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। राजनीतिक रूप से, घोष ने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो एकता, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक गर्व के सिद्धांतों पर आधारित हो। विविधता के बीच राष्ट्रीय एकता और सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता वर्तमान समय में भी महत्वपूर्ण है, जब समाज पहचान, समावेशिता और वैश्विक अंतर्संबंधता के मुद्दों से जूझ रहे हैं। सांस्कृतिक बहुलता और समावेशी विकास के मॉडल की खोज में घोष का दृष्टिकोण राष्ट्रवाद और सामाजिक न्याय पर बहस को प्रेरित करता है।[2]

आपस में जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं और बहुसांस्कृतिक समाजों के वर्तमान युग में, घोष के विचार नैतिक नेतृत्व, स्थिर विकास और वैश्विक नागरिकता के लिए एक ढांचा प्रदान करते हैं। आधुनिक दृष्टिकोण से घोष की शिक्षाओं को पुनः देखने से, यह शोध पत्र नैतिक शासन, समावेशी विकास को बढ़ावा देने, और विविध विश्व में सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व को प्रोत्साहित करने में उनकी स्थायी प्रासंगिकता को उजागर करने का प्रयास करता है। अंततः, आरविंद घोष की बौद्धिक धरोहर समय और भूगोल की सीमाओं से परे है, जो वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और मानव सभ्यता को एक अधिक न्यायसंगत और स्थिर भविष्य की ओर अग्रसर करने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है।[3]

2. शोध कार्य के उद्देश्य

1. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करना।
2. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना ।
3. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना ।
4. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर राजनीतिक विचारों का अध्ययन करना ।
5. अरविन्द घोष के मूल ग्रन्थों के आधार पर शैक्षिक , दार्शनिक और राजनीतिक विचारों का अध्ययन करना ।

3. शोध परिकल्पनाएँ

1. महर्षि अरविंद जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
2. महर्षि अरविंद जी के शैक्षिक विचार का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
3. महर्षि अरविंद जी के दार्शनिक विचार का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
4. महर्षि अरविंद जी के राजनीतिक विचार का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
5. महर्षि अरविंद जी के शैक्षिक विचार , दार्शनिक विचार और राजनीतिक विचार का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

4. अरविन्द जी के शैक्षिक विचार

अरविन्द घोष का शैक्षिक दृष्टिकोण संपूर्ण और समग्र था। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं माना, बल्कि आत्म–विकास, आत्म–जागरूकता, और सामाजिक सेवा का साधन माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर छिपी दिव्यता को जाग्रत करना और उसकी अंतर्निहित क्षमताओं को विकसित करना था। उन्होंने तीन मुख्य बिंदुओं पर जोर दिया:[4]

- **स्व–शिक्षा :** अरविन्द के अनुसार, शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य आत्म–ज्ञान और आत्म–विकास है। उन्होंने मानवीय चेतना के विकास पर जोर दिया और माना कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को आत्मा से जोड़ती है।[5]

- **समग्र विकास :** उन्होंने मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी शामिल होना चाहिए।

- **स्वतंत्र और रचनात्मक सोच :** अरविन्द ने विद्यार्थियों को स्वतंत्र और रचनात्मक सोच के लिए प्रेरित किया। उन्होंने रटने की बजाय समझने और नए विचारों को विकसित करने पर जोर दिया।[5]

5. अरविन्द जी के दार्शनिक विचार

अरविन्द घोष के दार्शनिक विचार वेदांत और योग पर आधारित थे। उन्होंने अपनी विचारधारा को 'इंटीग्रल योग' या 'पूर्ण योग' के रूप में प्रस्तुत किया। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं: [6]

- **सर्वोच्च :** अरविन्द ने मानवीय जीवन का उद्देश्य सर्वोच्च चेतना या दिव्यता को प्राप्त करना बताया। उन्होंने मानव जीवन को आत्म–साक्षात्कार और दिव्यता की ओर उन्मुख किया।

- **योग का महत्व :** उन्होंने योग को आत्म–विकास और आत्म–साक्षात्कार का मार्ग बताया। उनके अनुसार, योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह मानसिक और आत्मिक शुद्धिकरण का साधन है। [6]

- **संपूर्णता :** अरविन्द ने श्पूर्ण योगश के माध्यम से जीवन के सभी पहलुओं – शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक – का संतुलन और एकीकरण करने पर जोर दिया।

6. अरविन्द जी के राजनीतिक विचार

अरविन्द घोष के राजनीतिक विचार उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी सक्रिय भागीदारी से प्रभावित थे। उनके प्रमुख राजनीतिक विचार इस प्रकार हैं: [7]

- **स्वराज :** अरविन्द ने भारतीय स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन किया और स्वराज को भारतीय जनता का जन्मसिद्ध अधिकार माना। उन्होंने विदेशी शासन के खिलाफ जोरदार संघर्ष किया और आत्म–निर्भरता पर बल दिया। [7]

- **सांस्कृतिक पुनरुत्थान :** उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पुनर्स्थापना पर जोर दिया। उनका मानना था कि भारतीय स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आजादी नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान भी महत्वपूर्ण है।

- **सामाजिक न्यायः** अरविन्द ने सामाजिक समानता और न्याय का समर्थन किया। उन्होंने जाति, धर्म, और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध किया और एक समतामूलक समाज की स्थापना का समर्थन किया। [8]

आरविंद घोष के शैक्षिक, दार्शनिक, और राजनीतिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं और हमें एक बेहतर और अधिक समतामूलक समाज की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। उनके विचारों की गहराई और व्यापकता हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए एक मूल्यवान धरोहर हैं। [9]

7. निष्कर्ष

आरविंद घोष के शैक्षिक, दार्शनिक, और राजनीतिक विचारों का गहन विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि उनके विचार न केवल उनके समय के लिए बल्कि आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके व्यापक दृष्टिकोण और समग्र दृष्टिकोण ने शिक्षा, समाज और राजनीति के क्षेत्र में नए मानदंड स्थापित किए हैं।

शैक्षिक विचारों का प्रभाव

आरविंद घोष के शैक्षिक विचारों ने शिक्षा के महत्व और उसकी भूमिका को एक नए दृष्टिकोण से देखा। उनकी यह मान्यता कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास और आत्म–साक्षात्कार का माध्यम है, आज भी शिक्षाविदों और नीतिनिर्माताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका जोर स्व–शिक्षा, समग्र विकास और स्वतंत्र और रचनात्मक सोच पर था, जो आज के शिक्षा प्रणाली में नवाचार और सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

दार्शनिक विचारों का प्रभाव

आरविंद के दार्शनिक दृष्टिकोण ने आध्यात्मिकता और तार्किकता के बीच संतुलन स्थापित किया। उनकी विचारधारा श्इंटीग्रल योगश ने योग और वेदांत के सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक विचारों के साथ एकीकृत किया। यह दृष्टिकोण आज भी आध्यात्मिकता, नैतिकता, और व्यक्तिगत विकास के लिए एक समग्र मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। उनकी अवधारणा कि मानव जीवन का उद्देश्य सर्वोच्च चेतना की प्राप्ति है, ने कई लोगों को जीवन के गहरे अर्थ की खोज करने के लिए प्रेरित किया है।

राजनीतिक विचारों का प्रभाव

आरविंद घोष के राजनीतिक विचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के महत्वपूर्ण सिद्धांत थे। उनका स्वराज का सिद्धांत और सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर जोर ने भारतीय समाज को आत्म–निर्भरता और सांस्कृतिक गर्व के प्रति प्रेरित किया। उनका सामाजिक न्याय का दृष्टिकोण, जिसमें उन्होंने सभी

प्रकार के भेदभाव का विरोध किया, आज भी सामाजिक सुधारकों और राजनीतिक नेताओं के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में, जब विश्व भर में शिक्षा प्रणाली, आध्यात्मिकता की भूमिका, और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर गहन विचार–विमर्श हो रहा है, आरविंद घोष के विचार और अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने हमें यह सिखाया कि शिक्षा केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह आत्म–ज्ञान और सामाजिक प्रगति का साधन है। उनकी दार्शनिक दृष्टि ने यह स्पष्ट किया कि आध्यात्मिकता और तार्किकता के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि वे एक–दूसरे को समृद्ध करते हैं। उनके राजनीतिक विचार आज भी हमें एकता, सामाजिक न्याय, और सांस्कृतिक पहचान के महत्व की याद दिलाते हैं।

अंततः, आरविंद घोष की विचारधारा का विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि उनके विचार सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं। उनके शैक्षिक, दार्शनिक, और राजनीतिक दृष्टिकोण ने न केवल उनके समय में बल्कि आज भी गहरे प्रभाव डाले हैं। उनके विचारों की गहराई और व्यापकता हमें एक बेहतर, समतामूलक और समृद्ध समाज की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। उनके सिद्धांतों को अपनाकर और उनके दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, हम आधुनिक दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और एक अधिक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज का निर्माण कर सकते हैं। आरविंद घोष की विरासत हमें निरंतर प्रेरणा देती है और हमें उनके अद्वितीय योगदान के लिए सदैव आभारी रहना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सेख, एच. ए. (2020), अरबिंदो के दार्शनिक विचारः आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर इसका प्रभाव, इंटरनैशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एप्लाइड साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, 5(8), 232–234।
2. दुबे, के. (2020), बीआर अंबेडकर और उनका राजनीतिक दर्शन, पैलआर्क के जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजी ऑफ ईजिप्टध्इजिप्टोलॉजी, 17(9), 3301–3310।
3. अहमद, एम., और गोडियाल, एस. (2021), ऑरबिंदो घोष के शैक्षिक और दार्शनिक विचारों का अध्ययन और वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता, एशियाई बेसिक एंड एप्लाइड रिसर्च जर्नल, 166–170।
4. प्रमिला मलिक, एस. (2021), श्री अरबिंदो घोष का सामान्य और शैक्षिक दर्शन, एनवीईओ–नैचुरल वोलेटाइल्स एंड एसेंशियल ऑयल्स जर्नल, एनवीईओ, 1645–1655।
5. खातून, ए. (2021) , आध्यात्मिक राष्ट्रवादः राष्ट्रवाद की महत्वाकांक्षी धारणा के तहत श्री अरबिंदो घोष का एक आदर्श दर्शन, मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स फॉर रिसर्च–पप वॉल्यूम–2, 21।
6. कुमार, पी. (2019),श्री अरविंदो घोषः उसके आंतरराष्ट्रीयवाद पर एक विश्लेषण, थिंक इंडिया जर्नल, 22(14), 16721–16726।
7. हुसैन, एम. एस., और यादव, बी. बी. (2018) श्री अरविंदो घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य दृष्टिकोणष्, अंतरराष्ट्रीय
8. हुसैन, एम. एस., और यादव, बी. बी. (2018) श्री अरविंदो घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य दृष्टिकोणष्, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सांस्कृतिक समाज, वॉल्यूम – 2, इश्यू – 2, फरवरी – 2018।

9. रॉय, ए. के. (2018),औरोबिंदो की आध्यात्मिक शिक्षा पर विचार, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 8(11), 750–755।
10. ललिता, एस. (2018), स्वामी विवेकानंद और श्री औरोबिंदो का दर्शन – एक आलोचनात्मक विश्लेषण, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज, एजर, 3, 17।
11. कुमार, पी। (2019), श्री औरोबिंदो घोषः उसके अंतर्राष्ट्रीयवाद पर विचार का विश्लेषण, थिंक इंडिया जर्नल, 22(14), 16721–16726।
12. प्रमिला मलिक, एस. (2021), श्री अरबिंदो घोष का सामान्य और शैक्षिक दर्शन, एनवीईओ–नैचुरल वोलेटाइल्स एंड एसेंशियल ऑयल्स जर्नल, एनवीईओ, 1645–1655।
13. खातून, ए. (2021) , आध्यात्मिक राष्ट्रवादः राष्ट्रवाद की महत्वाकांक्षी धारणा के तहत श्री अरबिंदो घोष का एक आदर्श दर्शन, मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स फॉर रिसर्च–पप वॉल्यूम–2, 21।
14. कुमार, पी. (2019),श्री अरविंदो घोषः उसके आंतरराष्ट्रीयवाद पर एक विश्लेषण, थिंक इंडिया जर्नल, 22(14), 16721–16726।
15. हुसैन, एम. एस., और यादव, बी. बी. (2018) श्री अरविंदो घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य दृष्टिकोण, अंतरराष्ट्रीय
16. हुसैन, एम. एस., और यादव, बी. बी. (2018) श्री अरविंदो घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य दृष्टिकोण, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सांस्कृतिक समाज, वॉल्यूम – 2, इश्यू – 2, फरवरी – 2018।
17. रॉय, ए. के. (2018),औरोबिंदो की आध्यात्मिक शिक्षा पर विचार, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 8(11), 750–755।
18. ललिता, एस. (2018), स्वामी विवेकानंद और श्री औरोबिंदो का दर्शन – एक आलोचनात्मक विश्लेषण, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज, एजर, 3, 17।
19. कुमार, पी। (2019), श्री औरोबिंदो घोषः उसके अंतर्राष्ट्रीयवाद पर विचार का विश्लेषण, थिंक इंडिया जर्नल, 22(14), 16721–16726।
20. सेख, एच. ए. (2020), अरबिंदो के दार्शनिक विचाररू आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर इसका प्रभाव, इंटरनैशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एप्लाइड साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, 5(8), 232–234।
21. हुसैन, एम. एस., और यादव, बी. बी. (2018) श्री अरविंदो घोष की शिक्षा दर्शनः एक सामाजिक कार्य दृष्टिकोण, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सांस्कृतिक समाज, वॉल्यूम – 2, इश्यू – 2, फरवरी – 2018।